Electronic International Interdisciplinary Research Journal (EIIRJ)
ISSN 2277-8721 UGC Approved Journal No 48833

हिन्द–यवन शासकों की मुद्रायें : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ.जमील अहमद
प्राचीन इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

मुदा का विकास क्रम मानव समाज की प्रगति के पड़ावों का इतिहास है। मुद्राओं की कहानी प्रागैतिहासिक मानव द्वारा बदले में पाने की इच्छा से दिये गये उपहारों से प्रारम्भ होती है। कालांतर में धातुओं के ज्ञान से इस दिशा में उल्लेखनीय प्रगति हुई।

भारत में विदेशी सिक्कों के आगमन के बहुत पूर्व यहाँ बहुमूल्य धातुओं की अपनी देशी मुद्रायें थी। यह मुद्रायें प्रतीक चिह्नों, भार–मान, धात्विक अनुपात व मौद्रिक विनिमय जैसे विभिन्न क्षेत्रों में अपनी विशिष्ट मौलिकता से सम्पन्न थीं। यद्यपि मुद्रा निर्माण के विकास को हिन्द–यवन, शक, पह्लव, कुषाण तथा रोमन जैसी विदेशी मुद्रा परम्पराओं ने यहाँ की देशी मुद्रा पर अविस्मरणीय छाप छोड़ी। विदेशी परम्परा के अन्तर्गत मुद्रा जारी करना शासक का विशेषाधिकार था, उस पर उसका नाम, उसकी उपाधि तथा अधिकांशतः उसका चित्र भी अंकित होना अनिवार्य था। वस्तुतः हिन्द–यवन मुद्रा आदर्श का अनुकरण शक, पह्लव और कुषाणों ने भी किया।

मौर्योत्तर कालीन भारत पर विदेशी आक्रमणों की श्रृंखला में सर्वप्रथम बैक्ट्रियन ग्रीक शासकों का नाम आता है जिन्हें प्राचीन ग्रन्थों में यवन कहा गया है। हिन्दुकुश पर्वत व आक्सस के मध्य बैक्ट्रिया अत्याधिक उपजाऊ प्रदेश था, जिसे स्ट्रैबो ने "आरियाना का गौरव" कहा है। बैक्ट्रिया में यूनानी बस्ती का प्रारम्भ एकेमेनिड काल में हुआ, जिसका समय पाँचवी शताब्दी ई.पू. था। इस क्रम में सिकन्दर, सेल्युकस एण्टियोकस प्रथम का नाम लिया जा सकता है। एण्टयोकस प्रथम के क्षत्रप डायोडोटस ने विद्रोह करके स्वतन्त्र बैक्ट्रिया राज्य की स्थापना की। डेमेट्रियस जिसका समय 220 ई. पू से 175 ई. पू. के मध्य था, ने 183 ई. पू.

सिन्ध व पंजाब पर अधिकार करके भारत में हिन्द–यवन राज्य की स्थापना की। उसने साकल को राजधानी बनाकर यूनानी व खरोष्ठी लिपि में लेखांकित सिक्के जारी किये। कालान्तर में हिन्द–यवन साम्राज्य दो कुलों, डेमेट्रियस तथा यूक्रेटाइडीज में बट गया। यूक्रेटाइडीज ने तक्षशिला को राजधानी बनाया। मिनेण्डर जिसका शासन काल 160 ई. पू. से 120 ई. पू. के मध्य था, डेमेट्रियस कुल से था। इसने साकल को राजधानी बनाया, जो शिक्षा में पाटलिपुत्र के समकक्ष थी। इसके सिक्के भड़ौच से मिले हैं। इसकी कांस्य मुद्राओं पर धर्मचक्र का अंकन मिलता है। उल्लेखनीय है कि मिनेण्डर ने बौद्धभिक्षु नागसेन से प्रभावित होकर बौद्ध धर्म ग्रहण कर लिया था। हरमेयस यूक्रेटाइडीज वंश का अन्तिम हिन्द–यवन शासक था, जिसका राज्य ऊपरी काबुल घाटी तक सीमित था। इसने 50 ई. पू. से 30 ई. पू. के मध्य शासन किया। वस्तुतः हरमेयस के ही समय पश्चिमोत्तर भारत से यवनों का लगभग दो सौ वर्षों का शासन समाप्त हो गया।

हिन्द–यवन शासकों ने सोने, चाँदी तथा ताँबे के सिक्के जारी किये। डेमेट्रियस द्वितीय से पहले द्विलिपि सिक्कों का प्रचलन नहीं था। द्विलिपि सिक्कों की परम्परा डेमेट्रियस द्वितीय से प्रारम्भ होती है, जिसके अन्तर्गत यूनानी तथा खरोष्ठी दोनों लिपियों में मुद्रायें लेखांकित की गयीं। यद्यपि पेण्टालिओन, अगाथोक्लीज के सिक्के इसके अपवाद है, जिनके अग्रभाग पर ब्राह्मी लिपि में तथा पृष्ठभाग पर यूनानी लिपि में लेखांकन प्राप्त होता है। हिन्द–यवन शासकों की मुद्राओं के अग्रभाग पर अत्यन्त स्पष्ट राजा की आवक्ष आकृति चित्रांकित है। पृष्ठभाग पर किसी देवी या देवता की आकृति का अंकन या उनके किसी पवित्र चिह्न का अंकन यूनानी व खरोष्ठी लिपि में प्राप्त होता है[1]। इन सिक्कों पर जियस, हेराक्लीज, अपोलो, पोसीडन, डियोस्कारोइ जैसे देवता तथा पल्लस, निके, आर्तमीज आदि देवियों का अंकन मिलता है। इसके अतिरिक्त स्तूप, कैडुकस, पिलोइ (अण्डाकार टोपी) *ट्राईपाड, लिबिस* (अपोलो देवता का विशेष चिह्न) आदि का भी अंकन प्राप्त होता है। शासकों का नाम व उपाधियाँ सिक्कों के अग्रभाग पर यूनानी लिपि में तथा पृष्ठभाग पर देवी देवताओं व अन्य का अंकन खरोष्ठी लिपि में लेखांकन के साथ मिलता है। यूनानी लिपि में *बेसिलिओस, निकेफराउ, स्ट्रेटोनास मेगालाउ, एनिकेटाउ, रोटेरोस, डिकाइसो* और खरोष्ठी लिपि में *त्रतस, अपडिहसत, जयधरस, महरजस, त्रतरस, ध्रमिकस* आदि लेखांकित है। सामान्यतया इन सिक्कों पर यूनानी

Electronic International Interdisciplinary Research Journal (EIIRJ)

ISSN 2277-8721 UGC Approved Journal No 48833

अक्षरों से बने मोनोग्राम भी मिलते हैं। कुछ हिन्द–यवन सिक्कों पर राजाओं के युगलचित्र भी प्राप्त होते हैं जैसे *स्ट्रेटो व एगाथोक्लिया* के अंकन आदि। यह युगल चित्राकंन सम्मिलित शासन की ओर संकेत करते हैं।

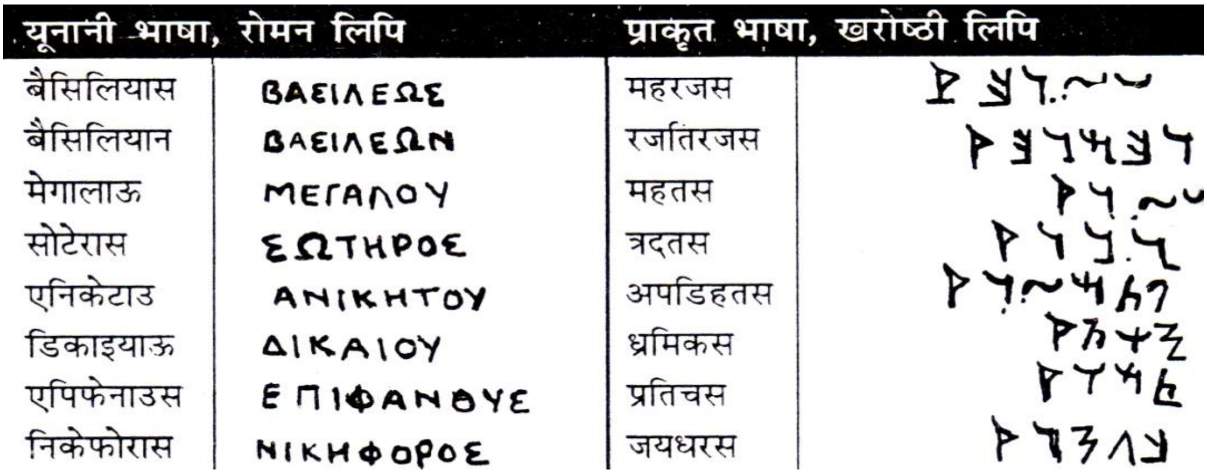

यूनानी भाषा, रोमन लिपि		प्राकृत भाषा, खरोष्ठी लिपि	
बैसिलियास	ΒΑΣΙΛΕΩΣ	महरजस	[illegible]
बैसिलियान	ΒΑΣΙΛΕΩΝ	रर्जातिरजस	[illegible]
मेगालाऊ	ΜΕΓΑΛΟΥ	महतस	[illegible]
सोटेरास	ΣΩΤΗΡΟΣ	त्रदतस	[illegible]
एनिकेटाउ	ΑΝΙΚΗΤΟΥ	अपडिहतस	[illegible]
डिकाइयाऊ	ΔΙΚΑΙΟΥ	ध्रमिकस	[illegible]
एपिफेनाउस	ΕΠΙΦΑΝΟΥΣ	प्रतिचस	[illegible]
निकेफोरास	ΝΙΚΗΦΟΡΟΣ	जयधरस	[illegible]

तालिका : हिन्द–यवन शासकों की मुद्राओं पर अंकित उपाधियाँ

(आभार : राव एवं राव, 1998)

डायोडोटस, जिसके शासन का प्रारम्भ लगभग 245 ई. पू. माना गया है, के सिक्कों के अग्रभाग पर मुकुट धारण किये राजा की आवक्ष आकृति का अंकन मिलता है। पृष्ठभाग पर *जियस* का चित्रांकन है, जिसके बांयें हाथ में ढाल है तथा दाहिने हाथ से वज्र फेंकता हुआ दर्शाया गया है और पैर के पास बाज की आकृति बनी है। यूनानी लिपि में *बेसिलिओस डायोडोटाउ* लेखांकित है।[2] इसकी कुछ मुद्राओं के अग्रभाग पर राजा *मेसीडोनियन टोपी कैसिया* धारण किये हुए दर्शाया गया है। पृष्ठभाग पर देवी पल्लस का चित्रांकन है जिसके दाहिने हाथ में *भाला* है और भूमि में छोटी ढाल रखी है।[3] डायोडोटस के उपरान्त यूथीडेमस प्रथम शासक बना, जिसका शासन लगभग 220 ई. पू. में प्रारम्भ हुआ। यूथीडेमस द्वारा जारी मुद्राओं के अग्रभाग पर मुकुट धारण किये हुए राजा का चित्रांकन है। पृष्ठभाग पर *नग्न हेराक्लीज* का चित्रांकन है, जो दाहिने हाथ में *मुग्दर* लिए चट्टान पर बैठा है।[4] जबकि कुछ सिक्कों पर *हेराक्लीज सिंह–चर्म बिछी चट्टान* पर बैठा है।[5] यूनानी लिपि में *बेसिलिओस यूथीडिमाऊ* लेखांकित है। इसी शासक की कुछ ताम्र मुद्राओं के अग्रभाग पर दाढ़ीयुक्त हेराक्लीज का चित्रांकन है। डेमेट्रियस के सिक्को के अग्रभाग पर *मुकुट* व *हाथी का शिरोवल्क* धारण किये राजा की आवक्ष आकृति चित्रांकित है। पृष्ठभाग पर *नग्न हेराक्लीज* का अंकन है,

जो मुकुट धारण किए हुए है तथा हाथ में *मुग्दर व सिंह–चर्म* लिए खड़ा है। यूनानी लिपि मे *बेसिलिओस डेमेट्रियाउ* लेखांकित है।[6] कुछ सिक्कों के अग्रभाग पर सिर में *सिरपेंचे की लता* की माला धारण किये *दाढ़ी युक्त हेराक्लीज* का अंकन है। पृष्ठभाग पर *देवी आर्तमीज* का चित्रांकन है,जिनके बांयें हाथ में धनुष दर्शाया गया है तथा दाहिने हाथ से पीठ में बंधे तरकस से बाण निकाल रही है।[7] यूथीडेमस द्वितीय द्वारा जारी मुद्राओं के अग्रभाग पर मुकुट धारण किये राजा की आवक्ष आकृति का अंकन है। पृष्ठभाग पर *सिरपेंचे* की लता का मुकुट धारण किये हेराक्लीज दाहिने हाथ में फूलों की माला तथा बांयें हाथ में *सिंह–चर्म व मुग्दर* लिये खड़ा है। यूनानी लिपि में *बेसिलिओस यूथीडेमाउ* लेखांकित है।[8] इसी शासक के कुछ सिक्कों के अग्रभाग पर *लारेल पत्रों से सुसज्जित अपोलो का सिर* तथा पृष्ठभाग पर *ट्राईपाडलिबिस*[9], जो अपोलो का विशेष चिह्न है, का अंकन मिलता है। एण्टिमेकस थियोस द्वारा जारी मुद्राओं के अग्रभाग पर *मुकुट और कैसिया* धारण किये राजा का आवक्ष चित्रण है। पृष्ठभाग पर *पोसीडन* का अंकन है, जिसके दाहिने हाथ में *त्रिशूल* तथा बायें हाथ में फीते से बंधा ताड़पत्र है। यूनानी लिपि में *बेसिलिओस एण्टिमेकाउ* लेखांकित है।[10] कुछ अन्य सिक्कों के अग्रभाग पर हाथी तथा पृष्ठभाग पर पंखयुक्त खड़ी हुई *देवी निके* का अंकन है। एण्टिमेकस ने डायोडोटस प्रथम तथा यूथीडेमस की स्मृति में भी सिक्के जारी किये। डेमेट्रियस ने अपने शासन काल में जो सिक्के जारी किये उनके अग्रभाग पर मुकुटधारी राजा की आवक्ष आकृति का चित्रांकन है। पृष्ठभाग पर *माला तथा ढाल लिये पल्लस* की आकृति है। यूनानी लिपि में *बेसिलिओस डेमेट्रियाउ* लेखांकित है।[11] डेमेट्रियस के ही कुछ अन्य सिक्कों पर *मुकुट व कैसिया* धारण किये राजा का अंकन है। यूनानी लिपि में *बेसिलिओस एनिकेटाउ डेमेट्रिआउ* लेखांकित है। पृष्ठभाग पर *ब्रज फेंकता हुआ राजदण्ड लिए जियस* का चित्रांकन है। खरोष्ठी लिपि मे *महरजस अपडिहतस दिमेत्रियस* लेखांकित है। कुछ सिक्कों पर *पंखयुक्त वज्रांकन* है तथा कुछ पर सूड़ उठाये हाथी का सिर है, जिसके गले में घण्टी का अंकन मिलता है। हिन्द–यवन शासकों के सिक्कों के अग्रभाग पर मुकुटधारी राजा की अवक्ष आकृति चित्रांकित मिलती है इसलिए इस अंकन का उल्लेख बार–बार आवश्यक नहीं है। पेण्टालिओन[12] की मुद्राओं के पृष्ठभाग पर बैठा हुआ जियस चित्रांकित है, जिसके बांयें हाथ में राजदण्ड दाहिने हाथ में त्रिमुखी हैकेट है। यूनानी लिपि में *बेसिलिओस पेण्टालिओटोस* लेखांकित है। एगाथोक्लीज

ISSN 2277-8721 UGC Approved Journal No 48833

द्वारा जारी मुद्राओं के पृष्ठभाग तथा अग्रभाग का चित्रांकन भी पेण्टालिओन के सिक्कों की तरह है। यूनानी लिपि में *बेसिलिओस एगाथोक्लीआउस* लेखांकित है।[13] इसी शासक के अन्य सिक्कों के अग्रभाग पर माला धारण किये हुए बांयें कन्धे पर भाला रखे डायोनियस की आकृति चित्रांकित है। पृष्ठभाग पर तेन्दुआ पंजे उठाकर अंगूर की बेल को छू रहा है।[14] एगाथोक्लीज ने सिकन्दर की स्मृति वाले सिक्के भी जारी किये, जिसके अग्रभाग पर *सिंह शिरोवल्क* धारण किये हुए *सिकन्दर का सिर* चित्रांकित है। पृष्ठभाग पर *बाज के साथ जियस सिंहासनारूढ़* है, साथ ही लम्बे राजदण्ड का भी अंकन है। यूनानी लिपि में *बेसिलिओण्टोस डिकाइओं एगोथोक्लीआउस* लेखांकित है।[15] यूक्रेटाइडीज ने जो मुद्रायें जारी की उनके पृष्ठभाग के अंकन में भिन्नता थी जैसे कुछ सिक्कों पर *ताड़पत्र लिये डियोस्कोरोइ भाले के साथ आक्रमण मुद्रा में* चित्रांकित है। यूनानी लिपि में *बेसिलिओस मेगालाउयूक्रेटिडाउ* लेखांकित है।[16] कुछ सिक्कों पर इसी लेखांकन के साथ *दो ताड़वृक्ष के साथ पिलोइ* का चित्रांकन मिलता है।[17] कुछ अन्य सिक्कों पर *माला व ताड़पत्र लिए निके* चित्रांकित हैं[18] अथवा *माला व ताड़पत्र के साथ सिंहासनारूढ़ जियस* को दर्शाया गया है। यूक्रेटाइडीज के कुछ अन्य सिक्कों पर स्त्री–पुरूष का संयुक्तांकन प्राप्त होता है और यूनानी लिपि में *हेलियोक्लियाय* व *काथलिओडिकेस* लेखांकित है। पृष्ठभाग पर *बेसिलिओस मेगालाउ यूक्रेटिडाउ* लेख के साथ मुकुट धारण किये यूक्रेटाइडीज की आवक्ष आकृति का अंकन किया गया है। कनिंघम तथा गार्डनर स्त्री–पुरूष के संयुक्तांकन को यूक्रेटाइडीज के माता–पिता होने की सम्भावना व्यक्त करते हैं। हेलियोक्लीज के समस्त सिक्कों के अग्रभाग पर यूनानी लिपि में *बेसिलिओस डिकाइओं हेलियोक्लिउस* तथा पृष्ठभाग पर *महरजस धमिकस हेलियक्रियस* लेख समान रूप से मिलता है।[19] इन सिक्कों के पृष्ठभाग पर *वज्र व राजदण्ड के साथ जियस, चलता हुआ घोड़ा या खड़ा हाथी, कूबड़दार बैल* आदि का चित्रांकन मिलता है।[20] लिसियस द्वारा जारी सिक्कों क पृष्ठभाग पर *मुकुट धारण करता हुआ हेराक्लीज* का चित्रांकन है, जिसके बांयें हाथ में *मुग्दर, सिंह–चर्म* तथा *ताड़पत्र* दर्शाया गया है। खरोष्ठी लिपि में *महरजस अपडिहतस लिसियस* लेखांकित है।[21]

एण्टिआल्किडस की मुद्राओं के अग्रभाग पर *राजा मुकुट* व *कैसिया* या *मुकुट* व *शिरस्त्राण* या केवल *मुकुट* धारण किये दर्शाया गया है। यूनानी लिपि में *बेसिलिओस निकेफराउ एण्टियोलकिडाउ* लेखांकित है। पृष्ठभाग पर सिंहासनारूढ़ जियस का चित्रांकन है,

जिसके बांयें हाथ में *राजदण्ड व दाहिने हाथ में माला* दर्शाया गया है, साथ ही *ताड़पत्र लिये निके* का भी चित्रांकन है। खरोष्ठी लिपि में *महरजस जयधरस अन्तियलिकितस* लेख अंकित किया गया है।[22] कुछ सिक्कों के पृष्ठभाग में गले में घण्टी धारण किये हाथी निके के हाथ से माला छीनने के लिए बढ़ रहा है।[23] डायोमिडीज, अपोलोडोटस, फिलोक्लीजनोस, स्ट्रेटो आदि की मुद्रायें भी उपरोक्त मुद्राओं की भाँति हैं। प्रसिद्ध हिन्द–यवन शासक मिनेण्डर द्वारा जारी मुद्राओं के अग्रभाग पर *राजा मुकुट* या *शिरस्त्राण धारण किये दाहिने हाथ से भाला फेंकते हुए* या *संतुलित भाला लिए हुए* चित्रांकित है। यूनानी लिपि में *बेसिलिओस सोटेरस मिनेण्डराउ* लेखांकित है। पृष्ठभाग पर देवी पल्लस का चित्रांकन *वज्र* व *ढाल* के साथ किया गया है। खरोष्ठी लिपि में *महरजस त्रतरस मिनेण्दरस* लेखांकित है।[24] इसके अन्य सिक्कों के अग्रभाग पर *शिरस्त्राण धारण किये देवी पल्लस की आकृति* का अंकन है, पृष्ठभाग पर *उल्लू* का चित्रांकन है।[25] कुछ सिक्कों के अग्रभाग पर *बैल का सिर* या *घण्टी युक्त हाथी का सिर*, पृष्ठभाग पर *ट्राईपाड लिबिस* या *हेराक्लीज की गदा* का अंकन है।[26] समस्त सिक्कों के लेख एक ही समान हैं। लेकिन अर्टिमिडोरोस की मुद्राओं पर राजा की उपाधि लेखांकित नहीं मिलती जबकि पृष्ठभाग पर खरोष्ठी में लेख के साथ *तीर चलाती आर्तमीज* का चित्रण है, जिसकी *पीठ पर तरकस बँधा हुआ* दर्शाया गया है।[27] हिप्पोस्ट्रेटस की मुद्राओं का अग्रभाग भी अर्टिमिडोरोस की मुद्राओं के अग्रभाग की तरह है। लेकिन पृष्ठभाग पर कार्नकोपिया लिये नगर देवी का अंकन अथवा योद्धा के वेश में राजा का अंकन है।[28]

हिन्द–यवन शासकों की श्रंखला में हरमेयस अन्तिम महत्वपूर्ण शासक था। हरमेयस ने जो मुद्रायें जारी कीं उनके अग्रभाग पर उपाधि सहित मुकुटधारी राजा की आवक्ष आकृति का अंकन मिलता है। पृष्ठभाग पर सिंहासनारूढ़ जियस का चित्रांकन है, जिसके बांयें हाथ में लम्बा राजदण्ड व दाहिनी भुजा बाहर निकाले दर्शाया गया है।[29] कुछ अन्य सिक्कों के अग्रभाग पर मुकुटधारी राजा–रानी की संयुक्त आवक्ष आकृति चित्रांकित है। यूनानी लिपि में *बेसिलिओस सोटेरोस अर्मियस केलिओपीस* लेखांकित है। पृष्ठभाग पर शस्त्रों से सुसज्जित राजा घोड़े पर सवार दर्शाया गया है। खरोष्ठी लिपि में *महरजस त्रतरस हर्मियस कलियपय*[30] लेखांकित है। एक अन्य सिक्के में *कुजुल कसस कुषन युवुगस ध्रमिस्थिदस* का अंकन है। हरमेयस के इन सिक्कों का समय प्रथम शताब्दी ई. था। रैप्सन का मानना है कि कुषाण नरेश

कुजुल कडफिसेस ने यूनानी राज्य का अन्त कर दिया। हरमेयस के सिक्कों पर उपाधि तथा कुजुल कडफिसेस के साथ हरमेयस का लखोंकन मिलता है। अल्टेकर का कहना है कि कडफिसेस ने पहले हरमेयस के साथ मिलकर शासन किया, इसी कारण दोनों का नाम एक साथ मिलता है। उल्लेखनीय है कि यूनानी शासकों द्वारा जारी सिक्कों के दोनों ओर यूनानी तथा खरोष्ठी में लेख मिलते हैं। जिन सिक्कों के अग्रभाग पर यूनानी लिपि तथा पृष्ठभाग पर खरोष्ठी लिपि में लेख है, उन सिक्कों को भारतीय माना गया है। ऐसा माना जाता है कि इनके एकभाषिक सिक्के बख्त्री क्षेत्र के लिए तथा द्विभाषिक सिक्के भारतीय क्षेत्र विशेष के लिए जारी किये गये, जहाँ खरोष्ठी लिपि का प्रचलन था। उल्लेखनीय है कि पश्चिमोत्तर भारत में खरोष्ठी लिपि का प्रचलन था तभी अशोक ने मानसेहरा तथा शहबाजगढ़ी के अभिलेखों को खरोष्ठी लिपि में उत्कीर्ण करवाया था।

उपरोक्त संश्लेषणों से परिलक्षित होता है कि हिन्द–यवन शासकों द्वारा प्रवर्तित मुद्रायें विभिन्न एतिह्य समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करती हैं तथा मौर्योत्तर कालीन इतिहास के अनेक अन्धकारमय पक्षों को प्रकाशित करती हैं। अपनी विशिष्ट के कारण इनकी मुद्राओं का अनुकरण शक, पह्लव व कुषाणों ने किया। भारतीय मुद्राशास्त्र के इतिहास में हिन्द–यवन मुद्रायें एक नये युग का सूत्रपात करती हैं।

सन्दर्भ

एच.एल. हट्टन – जे एन एस आई, जिल्द –4, पृष्ठ –146।

आर.बी. ह्वाइट हेड – कैटलॉग ऑफ क्वाइन्स इन द पंजाब म्यूजियम लाहौर, वल्यूम I, इण्डो–ग्रीक क्वाइन्स, पृष्ठ–9; तुलनीय –स्मिथ – क्वाइन्स ऑफ एन्शियन्ट इन्डिया, पृष्ठ –7–8।

आर.बी ह्वाइट हेड – कैटलॉग ऑफ इन्डोग्रीक क्वाइन्स, वल्यूम – I, पृष्ठ –10; तुलनीय –स्मिथ – क्वाइन्स ऑफ एन्शियन्ट इन्डिया, पृष्ठ –7–8।

उपरिवत् – पृष्ठ–10; तुलनीय – ए.के. भट्टाचार्या – इन्डियन क्वाइन्स इन द म्यूज गोमत, पृष्ठ –12; स्मिथ – क्वाइन्स ऑफ एन्शियन्ट इन्डिया, पृष्ठ –8–9।

उपरिवत्, पृष्ठ–11; तुलनीय – ए.के. भट्टाचार्या – इन्डियन क्वाइन्स इन द म्यूज गोमेत, पृष्ठ –12; स्मिथ–क्वाइन्स ऑफ एन्शियन्ट इन्डिया, पृष्ठ –8–9।

उपरिवत्, पृष्ठ–12; तुलनीय – पी.एल. गुप्ता – भारत के पूर्व–कालिक सिक्कें, पृष्ठ –110–112; ए.के. भट्टाचार्या–इन्डियन क्वाइन्स इन द म्यूज गोमेत, पृष्ठ –12; स्मिथ–क्वाइन्स ऑफ एन्शियन्ट इन्डिया, पृष्ठ–9।

आर.बी. ह्वाइटहेड – कैटलॉग ऑफ इन्डो ग्रीक क्वाइन्स, वाल्यूम–I, पृष्ठ–13; तुलनीय – पी. एल. गुप्ता– भारत के पूर्व–कालिक सिक्कें, पृष्ठ –110–112; ए.के. भट्टाचार्या–इन्डियन क्वाइन्स इन द म्यूज गोमेत, पृष्ठ–12; स्मिथ–क्वाइन्स ऑफ एन्शियन्ट इन्डिया, पृष्ठ –9।

उपरिवत् – पृष्ठ–14; तुलनीय –ए.के. भट्टाचार्या – इन्डियन क्वाइन्स इन द म्यूज गोमेत, पृष्ठ –12।

उपरिवत् – पृष्ठ–15; तुलनीय ––ए.के. भट्टाचार्या – इन्डियन क्वाइन्स इन द म्यूज गोमेत, पृष्ठ –12।

उपरवित् – पृष्ठ–18।

आर.बी. ह्वाइटहेड– कैटलॉग ऑफ इन्डोग्रीक क्वाइन्स; वाल्यूम I पृष्ठ –14; तुलनीय –ए.के. भट्टाचार्या – इन्डियन क्वाइन्स इन द म्यूज गोमेत, पृष्ठ –12।

उपरिवत्–पृष्ठ –16; तुलनीय –स्मिथ – क्वाइन्स ऑफ एन्शियन्ट इन्डिया, पृष्ठ –10।

उपरिवत्–पृष्ठ –17; तुलनीय – ए.के. भट्टाचार्या – इन्डियन क्वाइन्स इन द म्यूज गोमेत, पृष्ठ –12; स्मिथ–क्वाइन्स ऑफ एन्शियन्ट इन्डिया, पृष्ठ –10।

उपरिवत्–पृष्ठ –17; तुलनीय – ए.के. भट्टाचार्या – इन्डियन क्वाइन्स इन द म्यूज गोमेत, पृष्ठ –12।

आर.बी. ह्वाइटहेड– कैटलॉग ऑफ द इन्डो–ग्रीक क्वाइन्स, वाल्यूम–I, पृष्ठ –16; तुलनीय – ए.के. भट्टाचार्या – इन्डियन क्वाइन्स इन द म्यूज गोमेत, पृष्ठ –12।

उपरिवत्–पृष्ठ –20; तुलनीय – पी.एल. गुप्ता – भारत के पूर्व–कालिक सिक्कें, पृष्ठ –114–115; ए.के. भट्टाचार्या – इन्डियन क्वाइन्स इन द म्यूज गोमेत, पृष्ठ –13; स्मिथ – क्वाइन्स ऑफ एन्शियन्ट इन्डिया, पृष्ठ–11–13।

उपरिवत्–पृष्ठ –21; तुलनीय –ए.के. भट्टाचार्या – इन्डियन क्वाइन्स इन द म्यूज गोमेत, पृष्ठ –13; स्मिथ–क्वाइन्स ऑफ एन्शियन्ट इन्डिया, पृष्ठ –11–13।

उपरिवत्–पृष्ठ–26; तुलनीय –ए.के. भट्टाचार्या – इन्डियन क्वाइन्स इन द म्यूज गोमेत, पृष्ठ –13; स्मिथ – क्वाइन्स ऑफ एन्शियन्ट इन्डिया, पृष्ठ –11–13; पी.एल. गुप्ता – भारत के पूर्व–कालिक सिक्कें, पृष्ठ–114–115।

उपरिवत्–पृष्ठ –29; तुलनीय –ए.के. भट्टाचार्या – इन्डियन क्वाइन्स इन द म्यूज गोमेत, पृष्ठ –13; स्मिथ – क्वाइन्स ऑफ एन्शियन्ट इन्डिया, पृष्ठ –13–14।

उपरिवत् – पृष्ठ –27; तुलनीय –ए.के. भट्टाचार्या – इन्डियन क्वाइन्स इन द म्यूज गोमेत, पृष्ठ –13; स्मिथ – क्वाइन्स ऑफ एन्शियन्ट इन्डिया, पृष्ठ –13–14।

आर.बी. ह्वाइटहेड – कैटलॉग ऑफ द इन्डो–ग्रीक क्वाइन्स, वाल्यूम– I, पृष्ठ –30; तुलनीय –ए.के. भट्टाचार्या–इन्डियन क्वाइन्स इन द म्यूज गोमेत, पृष्ठ –14; स्मिथ – क्वाइन्स ऑफ एन्शियन्ट इन्डिया, पृष्ठ–14–15।

ISSN 2277-8721 UGC Approved Journal No 48833

उपरिवत् – पृष्ठ –32; तुलनीय –ए.के. भट्टाचार्या – इन्डियन क्वाइन्स इन द म्यूज गोमेत, पृष्ठ –14।
उपरिवत् – पृष्ठ –33; तुलनीय –ए.के. भट्टाचार्या – इन्डियन क्वाइन्स इन द म्यूज गोमेत, पृष्ठ –14।
उपरिवत् – पृष्ठ –54; तुलनीय –ए.के. भट्टाचार्या – इन्डियन क्वाइन्स इन द म्यूज गोमेत, पृष्ठ –16; स्मिथ – क्वाइन्स ऑफ एन्शियन्ट इन्डिया, पृष्ठ –22।
उपरिवत् – पृष्ठ –59; तुलनीय –ए.के. भट्टाचार्या – इन्डियन क्वाइन्स इन द म्यूज गोमेत, पृष्ठ–16;स्मिथ – क्वाइन्स ऑफ एन्शियन्ट इन्डिया, पृष्ठ –26।
आर.बी. ह्वाइटहेड–कैटलॉग ऑफ द इन्डो–ग्रीक क्वाइन्स, वाल्यूम.I पृष्ठ–61; तुलनीय–ए.के. भट्टाचार्या–इन्डियन क्वाइन्स इन द म्यूज गोमेत, पृष्ठ –16।
उपरिवत् – पृष्ठ –68।
उपरिवत् – पृष्ठ –74; तुलनीय –स्मिथ – क्वाइन्स ऑफ एन्शियन्ट इन्डिया, पृष्ठ –30।